॥ ॐ ह्रीं श्री कल्याण पार्श्वनाथ स्वामिने नमः ॥

॥ श्रीमद् आत्म-वल्लभ-समुद्र-इन्द्रदिन्न-रत्नाकर सूरीश्वर सद्गुरुभ्यो नमः ॥

॥ वर्तमान पट्टधर गच्छाधिपति श्रुतभास्कर आचार्य श्रीमद् विजय धर्मधुरन्धर सूरीश्वर सद्गुरवे नमः ॥

परमार क्षत्रियोद्धारक गुरु श्री इन्द्रदिन्न सूरि जन्म शताब्दी वर्ष 1923 - 2023

परमार क्षत्रियोद्धारक गुरु श्री इन्द्रदिन्न सूरि जन्म शताब्दी वर्ष 1923 - 2023

घर घर पाठशाला

8-16 साल के बालक-बालिकाओं के लिए

शुभ आशीर्वाद प्रदाता

गुरु आत्म-वल्लभ-समुद्र-इन्द्रदिन्न-रत्नाकर सूरि म.सा. के पट्टधर वर्तमान गच्छाधिपति

श्रुतभास्कर जैनाचार्य श्रीमद् विजय धर्मधुरधंर सूरीश्वर जी म.सा.

सद्प्रेरणा

गणिवर्य श्री धर्मरत्न विजय जी म.सा.

शुभ निश्रा प्रदाता

प.पू प्रवर्तनी साध्वी श्री अभय श्री जी म.सा की सुशिष्या

साध्वी श्री कल्पज्ञा श्री जी म.सा आदि ठाणा-6

आयोजक - भगवान श्री कल्याण पार्श्वनाथ जैन नवयुवक मंडल, लुधियाना

संचालन समिति - श्री कल्याण पार्श्वनाथ जैन मंदिर, किचलू नगर, लुधियाना

निवेदक- श्री आत्मानंद जैन सभा (रजि.), लुधियाना

गुरु स्तुति

भवोदधि-तारणपोत, मात त्रिशलासुत वंदो ।
हे जी, तपागच्छ- श्रीकार, पाट वंदी आणंदो ।।

परतिख शारदपूत, आतमानंद सूरिरायो।
हे जी, मिथ्यामत परिहार, शुद्ध मारग अपनायो ।।

युगद्रष्टा कोहिनूर, विजय वल्लभ सूरिराजे ।
हे जी, जिनआणाप्रतिबद्ध, सुजस महीतल गाजे ।।

निर्मल निश्चल संत, समुद्र सूरि जग सोहे ।
हे जी, समता साधक गुरूराय, मुक्ति-सोपान आरोहे ।।

क्षत्रियकुल-प्रतिबोध, वीर वाणी प्रसरावे ।
हे जी, इन्द्रदिन्न सूरिदेव, जयकमला जग पावे ।।

तस पट्टे केसरी सिंह, रत्नाकर सूरि प्रतापी ।
हे जी, प्रखर संयम तपतेज, शिथिलता थर-थर कांपी ।।

संप्रति धर्मधुरंधर, चउविहसंघ धुरा-धोरी ।
हे जी, जयवंत सुधर्मापाट, 'आशिष' मांगे कर जोरी।।

नवपद जी

तत्व त्रयी

देव	गुरु	धर्म
अरिहंत सिद्ध	आचार्य उपाध्याय साधु	दर्शन ,ज्ञान चरित्र,तप

कर्म

कर्म तो अनन्त है किन्तु उनकी मूल प्रकृतियाँ आठ हैं।

1. ज्ञानावरणीय
2. दर्शनावरणीय
3. वेदनीय
4. मोहनीय
5. आयुष्य
6. नाम
7. गोत्र
8. अन्तराय

नव अंग पूजा के दोहे

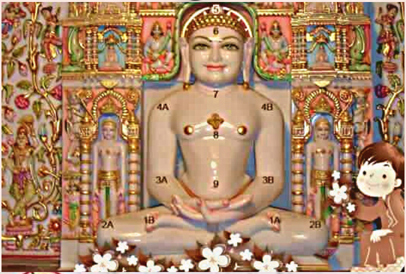

1. चरण :

जल भरी संपुट पत्रमां, युगलिक नर पूजंत
ऋषभ चरण अंगुठडे, दायक भवजल अंत ॥ 1 ॥

जब भगवान के अभिषेक के लिए युगलिक पत्तों में पानी लेकर आए तब तक इन्द्र महाराजा ने भक्तिपूर्वक प्रभु को वस्त्रों और गहनों से सजा दिया। इसलिए युगलिकों ने प्रभु के अंगूठे पर जल से पूजा की। हे प्रभु मैं भी जल पूजा द्वारा अपने भवजल (भव भ्रमण) का अंत चाहता हूँ।

---

2. जानु :

जानु बले काउस्सग्ग रह्या, विचर्या देश विदेश
खड़ा-खड़ा केवल लह्युं, पूजो जानु नरेश ॥ 2 ॥

हे प्रभु, आपने अपने घुटनों (जानु) के बल पर काउस्सग्ग किया और विहार किया। खडे-खडे आपने केवल ज्ञान भी प्राप्त किया। आपकी इस जानु पूजा के प्रभाव से मेरे जानु में भी वह ताकत प्रगट हो।

3.हाथ के कांडे :

लोकांतिक वचने करी, वरस्या वरषीदान ।
कर कांडे प्रभु पूजना, पूजो भवी बहुमान ॥ 3 ॥

प्रभु आपके समान मैं भी दोनों हाथो से वरषीदान देकर दीक्षा लेकर अपना कल्याण करुं।

---

4. खंभे (कंधा) :

मान गयुं दोय अंश थी, देखी वीर्य अनन्त ।
भुजा बले भव जल तर्या, पूजो खंध महंत ॥ 4 ॥

हे प्रभु आप इन कंधो (खंभे) के बल से भव सागर से तिर गए। आपकी इस पूजा से मेरा भी अहंकार चला जाए और मोक्ष जाने की ताकत मेरी भुजाओं को मिले।

5. शिखा :

सिद्धशिला गुण उजली, लोकांते भगवंत ।
वसिया तिणे कारण भवि, शिरशिखा पूजंत ॥ 5 ॥

आप इस लोक के सबसे ऊँचे भाग यानी, सिद्धशिला पर जा बसे हो। मुझे भी वह स्थान प्राप्त हो, इसलिए मैं आपके मस्तक शिखा की पूजा करता हूँ।

---

6. ललाट :

तीर्थंकर पद पुण्यथी, त्रिभुवन जन सेवंत ।
त्रिभुवन तिलक समा प्रभु, भाल तिलक जयवंत ॥ 6 ॥

हे प्रभु आप तीनों लोको में पूज्य हो इसलिए आप तीन लोक के तिलक समान हो, इसलिए आपके भाल को तिलक कर मैं भी तीर्थंकर पद पाना चाहता हूँ।

---

7. कंठ :

सोल प्रहर प्रभु देशना, कंठे विवर वर्तुल ।
मधुर ध्वनि सुर नर सुणे, तिणे गले तिलक अमूल ॥

हे प्रभु, आपने लगातार 16 प्रहर (48 घंटे) तक देशना देकर मनुष्यों, तिर्यंचों और देवताओं का उद्धार किया। मुझें भी ताकत मिले कि मैं सद्गुणों की अनुमोदना करुँ और लोगों का भला करुं।

---

8. हृदय :

हृदय कमल उपशम बले, बाल्या राग ने रोष ।
हिम दहे वनखंड ने, हृदय तिलक संतोष ॥ 8 ॥

जिस प्रकार भयंकर बर्फ की बारीश जंगल को जमा कर नाश कर देती है उसी प्रकार आपने अपने हृदय में राग–द्वेष का नाश कर दिया है। आपके ऐसे हृदय की पूजा करने से मुझे भी वैसी समता गुणों की प्राप्ति हो।

---

9. नाभि :

रत्नत्रयी गुण उजली, सकल सुगुण विसराम ।
नाभि कमल नी पूजना, करतां अविचल धाम ॥ 9 ॥

आपकी नाभि में सारे सद्गुण विद्यमान है। ज्ञान, दर्शन और चारित्र का खजाना है। अत: आपकी इस नाभि की पूजा से मुझे भी सम्यग् ज्ञान, सम्यग् दर्शन, सम्यग् चारित्र मिले और मैं भी मोक्षसुख प्राप्त करुं।

नवअंग का महत्व

उपदेशक नव तत्त्वना, तिणे नव अंग जिणंद ।
पूजो बहुविध राग थी, कहे शुभवीर मुणिंद ॥ 10 ॥

प्रभु ने नवतत्त्वों का उपदेश दिया। इसलिए प्रभु के नवअंग की पूजा बहुमान पूर्वक करनी चाहिए। प्रभु की पूजा से अपने अंदर नवतत्त्व का ज्ञान होता है।

अष्टप्रकारी पूजा के नाम

जल पूजा

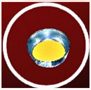

चंदन पूजा

पुष्प पूजा

धूप पूजा

दीपक पूजा

अक्षत पूजा

नैवेद्य पूजा

फल पूजा

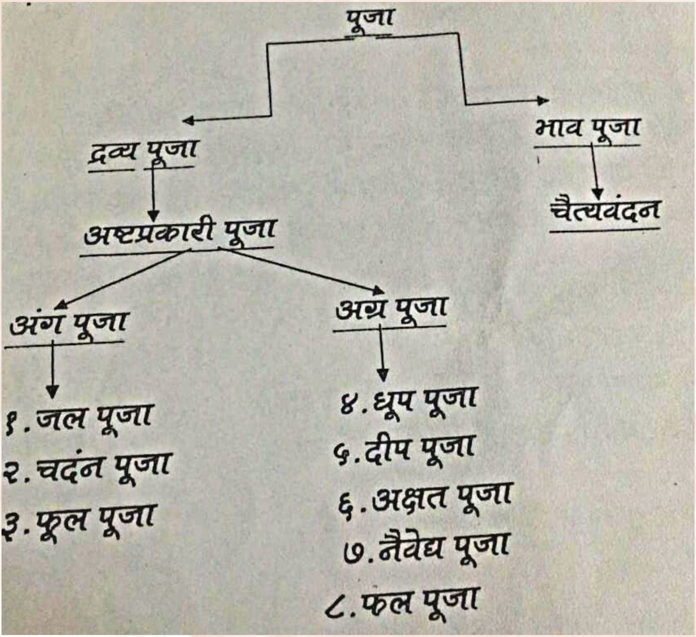
पूजा
द्रव्य पूजा
भाव पूजा
अष्टप्रकारी पूजा
चैत्यवंदन
अंग पूजा
अग्र पूजा
१.जल पूजा
२.चदंन पूजा
३.फूल पूजा
४.धूप पूजा
५.दीप पूजा
६.अक्षत पूजा
७.नैवेद्य पूजा
८.फल पूजा

गति कितनी उनके नाम

1. मनुष्यगति
2. देवगति
3. नरकगति
4. तिर्यंचगति

इरियावहियं सूत्र

1. इरियावहियं सूत्र

(IRIYAVAHIYAM SOOTRA)

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् !
ICHCHHAKARENA SANDISAHA BHAGAVAN !

इरियावहियं पडिक्कमामि ? इच्छं !
IRIYAVAHIYAM PADIKKAMAMI ? ICHCHHAM !

इच्छामि पडिक्कमिउं !
ICHCHHAMI PADIKKAMIUM !

इरियावहियाए विराहणाए !
IRIYAVAHIYAE VIRAHANAE !

गमणागमणे !
GAMANAGAMANE !

पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरियक्कमणे
PANAKKAMANE, BEEYAKKAMANE, HARIYAKKAMANE,

ओसा–उत्तिंग पणग–दगमट्टी–
OSA- UTTINGA-PANAGA-DAGA MATTEE-

मक्कडा संताणा संकमणे !
MAKKADA SANTANA SANKAMANE !

जे मे जीवा विराहिया ।
JE ME JEEVA VIRAHIYA |

एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया !
EGINDIYA, BEINDIYA, TEINDIYA, CHAURINDIYA, PANCHINDIYA !

अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया,
ABHIHAYA, VATTIYA, LESIYA, SANGHAIYA, SANGHATTIYA,

परियाविया, किलामिया, उद्दविया,
PARIYAVIYA, KILAMIYA, UDDAVIYA,

ठाणाओ ठाणं संकामिया, जीवियाओ ववरोविया,
THANAO, THANAM, SANKAMIYA, JEEVIYAO VAVAROVIYA,

तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।।
TASSA MICHCHHAMI DUKKADAM ॥

भावार्थ: इस सूत्र में चलते–फिरते, आते–जाते अपने द्वारा जीव–हिंसा आदि होने के कारण लगे हुए पापों को नष्ट करने के लिए पूर्व क्रिया रुप मिच्छामि दुक्कडं दिया जाता है।

EXPLANATION: Whatever sins are incurred or commited in going and coming are removed by this sootra.

इरियावहियं
इच्छाकारेण संदिसह भगवन् !
इरियावहियं पडिक्कमामि ?
इच्छं, इच्छामि पडिक्कमिउं
इरियावहियाए
विराहणाए
गमणागमणे
पाणक्कमणे
बीयक्कमणे
हरियक्कमणे
ओसा-उत्तिंग
पणग-दगमट्टी
मक्कडा-संताणा
संकमणे
जे मे जीवा विराहिया
एगिंदिया
बेइंदिया
तेइंदिया
चउरिंदिया
पंचिंदिया
अभिहया
वत्तिया
लेसिया
संघाइया
संघट्टिया
परियाविया
किलामिया
उद्दविया
ठाणाओ ठाणं संकामिया
जीवियाओ ववरोविया
तस्स मिच्छामि दुक्कडं

नवपद जी के नाम, गुण, वर्ण

देव तत्त्व

1	अरिहंत	सफेद	12
2	सिद्ध	लाल	8

गुरू तत्त्व

3	आचार्य	पीला	36
4	उपाध्याय	हरा	25
5	साधु	काला	27
पंच परमेष्ठि के गुण			108

धर्म तत्त्व

6	दर्शन	सफेद	67
7	ज्ञान	सफेद	51
8	चारित्र	सफेद	70
9	तप	सफेद	12
नवपद के गुण			308

जैन बालक की पहचान

बाल-संस्कार गीत

ये बातें कभी न भूले

ये बातें कभी न भूले (2)
जय अरिहंत, जय अरिहंत (2)

सुबह सवेरे जल्दी उठे, माता-पिता को नमन करें,
प्रभु के दर्शन, पूजन करें, ये बातें कभी न भूले ।।

रात्रि भोजन कभी न करें, आलू-कांदा कभी न खाये।
द्विदल-अभक्ष्य कभी न खाये, ये बातें कभी न भूले।।

बैठे-बैठे खाये वे मानव कहलाये, खडे-खडे खाये वे दानव कहलाये।
जैसे-तैसे कभी न खाये, ये बातें कभी न भूले।

टी.वी. विडियों कभी न देखे, अपशब्द कभी न बोले,
झूठ-चोरी कभी न करें, ये बातें कभी न भूले।

भाई-बहन कभी न लड़े, बडो के सामने कभी न बोले,
जीवन भर ये याद रखें, ये बातें कभी न भूले।।

बड़े होकर वज्रस्वामी बने, साधु नहीं तो श्रावक बने,
कुमारपाल जैसे धर्मी बनें, ये बातें कभी न भूले।

2. पंचिंदिय सूत्र

(PANCHINDIYA SOOTRA)

पंचिंदिय संवरणो,
PANCHINDIYA SAMVARANO

तह नवविह बम्भचेर गुत्तिधरो,
TAHA NAVA VIHA BAMBHACHERA GUTTIDHARO

चउविह कसाय मुक्को,
EHAUVIHA KASAYA MUKKO

इअ अट्ठारस गुणेहिं संजुत्तो
EAH ATTHARASA GUNEHIM SANJUTTO

पंच महव्वय जुत्तो,
PANCHA MAHAVVAYA JUTTO

पंच विहायार पालण समत्थो,
PANCHA VIHAYARA PALANA SAMATTHO

पंच समिओ तिगुत्तो,
PANCHA SAMIO TI GUTTO,

छत्तीस गुणो गुरु मज्झ
CHHATTEESA GUNO GURU MAJZA

स्थापना मुद्रा

(सामायिक पारते समय)
उत्थापन मुद्रा

भावार्थ: इस सूत्र में श्री आचार्य महाराज (गुरु) के छत्तीस गुणों का वर्णन है। कोई भी धार्मिक क्रिया करते समय स्थापनाचार्यजी की स्थापना करने के लिये यह सूत्र बोला जाता है।

EXPLANATION: In this sootra, are shown, the thirty six virtues of the revered acharya maharaja and this is recited at the times of doing the establishment of the acharya. One who possesses these thirty six virtues of the acharya maharaja and one who is awarded the designation of acharya is called acharya

सामायिक लेने के पाठ विधिसहित

सर्वप्रथम चरवले से भूमि साफ कीजिए, फिर चौकी आदि उच्च स्थान पर ठवणी रख कर उसके ऊपर जिस धार्मिक पुस्तक में नवकार मंत्र और पंचिंदिय (स्थापना सूत्र) हो वह पुस्तक और जपमाला (नवकार वाली) रखकर और स्वयं चार बालिश्त (ढ़ाई से तीन फुट) पीछे हट कर अपना आसन बिछाइये और उसके ऊपर चौकड़ी (पालथी) लगाकर बैठिये और चरवले की डंडी अपने बाएं घुटने पर रखिये। दाहिने हाथ को औंधा कर ठवणी के सन्मुख रख कर एक 'नवकार मंत्र' तथा 'पंचिंदिय' के पाठ से स्थापना स्थापन करिये, जैसा की नीचे के चित्र में प्रदर्शित किया गया है।

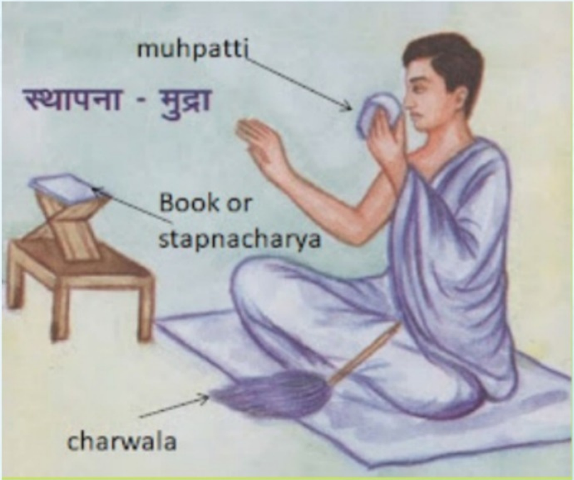

1. नवकार मंत्र

नमो अरिहंताणं
नमो सिद्धाणं
नमो आयरियाणं
नमो उवज्झायाणं
नमो लोए सव्वसाहूणं
एसो पंच-नमुक्कारो
सव्व-पावप्पणासणो
मंगलाणं च सव्वेसिं
पढमं हवइ मंगलं।

2. पंचिंदिय सूत्र

पंचिंदिय-संवरणो, तह-नवविह बंभचेर, गुत्तिधरो।
चउविह-कसाय मुक्को, इअ अट्ठारस गुणेहिं संजुत्तो। 1।
पंच-महव्वय-जुत्तो, पंचविहायार पालण-समत्थो।
पंच-समिओ तिगुत्तो, छत्तीसगुणो गुरू मज्झ। 2।

विशेष- अगर स्थापनाचार्य जी हों तो नवकार तथा पंचिंदिय सूत्र पढ़ने की आवश्यकता नहीं।

अब खड़े होकर 'खमासमण सूत्र' का पाठ पढ़ते हुए पंचांग खमासमण दीजिये।

3. खमासमण अथवा प्रणिपात सूत्र

इच्छामि खमासमणो!
वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए,
मत्थएण वंदामि ॥

(खमासमण देते हुए दोनों हाथ दोनों घुटने तथा मस्तक भूमि से लगने चाहियें।)

4. इरियावहियं सूत्र

इच्छाकारेण संदिसह भगवन! इरियावहियं पडिक्कमामि ? इच्छं ।।
इच्छामि पडिक्कमिउं इरियावहियाए विराहणाए ।।
गमणागमणे। पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरियक्कमणे,
ओसा उत्तिंग, पणगदग मट्टी-मक्कडा़, संताणा-संकमणे।।
जे मे जीवा विराहिया।।
एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया।।
अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया,
किलामिया, उद्दविया, ठाणाओ ठाणं संकामिया, जीवियाओ
ववरोविया, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।।

5. तस्स उत्तरी सूत्र

तस्स उत्तरी करणेणं, पायच्छित्त करणेणं, विसोही करणेणं, विसल्ली करणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घाय णट्ठाए, ठामि काउस्सग्गं ।।

6. अन्नत्थ (आगार) सूत्र

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं,
उड्डुएणं, वाय- निसग्गेणं, भमलीए पित्तमुच्छाए।।
सुहुमेहिं अंग संचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं ।।
एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो ।।
जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ।।
ताव कायं, ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ।।

खड़े-खड़े ही दोनों पावों के अंगूठों का आपस में चार अंगुल का अंतर रखकर और एड़ियों के पास कुछ कम अंतर रख कर अपने दोनों बाजू नीचे की तरफ सीधे करिये तथा अपनी आंखें ठवणी के ऊपर टिकाइये। बायें हाथ में चरवला तथा दायें हाथ में मुंहपत्ति पकड़नी होती है तथा मन ही मन जीभ तथा होंठ हिलाए बिना हिलने डुलने से रहित-एक लोगस्स का 'चंदेसु निम्मलयरा' तक या चार नवकार का कायोत्सर्ग कीजिए।)

7. लोगस्स (नाम-स्तव) सूत्र

लोगस्स उज्जो अगरे, धम्मतित्थयरे जिणे।
अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली।। 1।।
उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमई च।
पउमप्पहं सुपासं जिणं च चंदप्पहं वंदे।। 2।।
सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल, सिज्जंस, वासुपुज्जं च
विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि।। 3।।
कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च।
वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च।। 4।।
एवं मए अभिथुआ, विहुय रय-मला पहीण-जर मरणा।
चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु।। 5।।
कित्तिय वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा।
आरुग्ग- बोहि-लाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु।। 6।।
चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा।
सागर वर गम्भीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु।। 7।।

(फिर खमासमण दीजिए)

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए, मत्थएण वंदामि।।

(अब पावों के बल बैठ कर मुंहपत्ती खोलते हुए कहिए)

इच्छाकारेण संदिसह भगवन! सामायिक मुंहपत्ति पडिलेहुं? इच्छं।

(मुंहपत्ति पडिलेहते हुए पहले कन्नी वाली साईड अपने दोनों हाथों में पकड़नी चाहिये। ध्यान रहे कि मुंहपत्ती पडिलेहण की इस विधि का सामायिक करते समय तथा सम्पूर्ण करते समय बराबर उपयोग हो।)

मुंहपत्ति पडिलेह कर फिर एक खमासमण दीजिये।

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए,
मत्थएण वंदामि।।

(और इसी अवस्था में बैठे हुए थोड़ा झुक कर मुंहपत्ति को पलटते हुए) मुंहपत्ती सहित दोनों हाथ मस्तक से लगाकर निम्नलिखित पाठ पढ़िये

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सामायिक संदिसाहुं? इच्छं।

फिर खमासमण दीजिए

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए, मत्थएण वंदामि।।

फिर ऊपर बतलाए हुए के अनुसार निम्नलिखित पाठ पढिए

इच्छाकारेण संदिसह भगवन! सामायिक ठाउं? इच्छं।

(जब चरवला हो तो खड़े होकर मस्तक झुकाकर दोनों हाथ जोड़कर और यदि चरवला न हो तो बैठे-बैठे एक नवकार पढ़िये और कहिए)

इच्छकारी भगवन! पसाय करी सामायिक दण्डक उच्चरावो जी।

(यदि गुरूदेव जी विराजमान हों तो उनसे उच्चरावें या अपने से पहले किसी व्यक्ति ने सामायिक ली हो तो उससे उच्चरावें, अगर किसी ने भी न ली हो तो अपने आप निम्नलिखित पाठ पढ़ लेवें)

सामायिक लेने का 'करेमि भंते' सूत्र

करेमि भंते! सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि। जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं, मणेणं वायाए काएणं, न करेमि, न कारवेमि। तस्स भंते! पडिक्कामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।।

फिर खमासमण दीजिए

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि

पुनः ऊपर बताये अनुसार निम्नलिखित पाठ पढ़िये

इच्छाकारेण संदिसह भगवन! बेसणे संदिसाहुं? इच्छं।

फिर खमासमण दीजिए

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि

फिर निम्नलिखित पाठ पढ़िये

इच्छाकारेण संदिसह भगवन! बेसणे ठाउं ? इच्छं ।

फिर खमासमण दीजिए

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि

फिर निम्नलिखित पाठ पढ़िये

इच्छाकारेण संदिसह भगवन! सज्झाय संदिसाहुं ? इच्छं।

फिर खमासमण दीजिए

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि

फिर निम्नलिखित पाठ पढ़िये

इच्छाकारेण संदिसह भगवन! सज्झाय करूं? इच्छं।

(पुनः बैठ जाइये और दोनों हाथ जोड़ कर तीन नवकार पढ़िये और दो घड़ी (48 मिनट) तक स्वाध्याय करिए या माला गिनिये)

सामायिक पारने की विधि

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए, मत्थएण वंदामि ।

(इस प्रकार खमासमण पूर्वक पहले की तरह इरियावहियं, तस्स उत्तरी, अन्नत्थ का पाठ बोलकर चंदेसु निम्मलयरा तक लोगस्स न आवे तो चार नवकार का काउस्सग्ग करें और 'नमो अरिहंताणं' बोलकर प्रगट लोगस्स कहें। फिर खमासमण देकर)

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! मुँहपत्ति पडिलेहुँ ? 'इच्छं' (कहकर पचास

बोल से मुहपति पडिलेवे) (फिर खमासमण देकर)

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सामायिक पारूं ? 'यथाक्ति' (फिर खमासमण देकर)

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक पार्यु ? 'तहत्ति' (कहकर दाहिने हाथ को चरवले या आसन पर रखकर व मस्तक को झुकाकर एक नवकार गिनकर सामाइय वय जुत्तो बोलना।

फिर स्थापनाचार्यजी के सामने दाहिना हाथ उल्टा (अपने मुँह के सम्मुख खड़ा रखकर) एक नवकार गिने ।

जं किंचि सूत्र

जंकिंचि नाम तित्थं, सग्गे पायालि माणुसे लोए । जाइं जिणबिंबाई, ताइं सव्वाइं वंदामि

सामाईय वय - जुत्तो० (सामायिक पारण) सूत्र

सामाइय-वय-जुत्तो, जाव मणे होइ नियम -संजुत्तो ।
छिन्नइ असुहं कम्मं, सामाइय जत्तिया वारा ॥१॥
सामाइयंमि उकए, समणो इव सावओ हवइ जम्हा ।
एएण कारणेणं, बहुसो सामाइयं कुज्जा ॥ २ ॥ सामायिक विधि से लिया, विधि से पूर्ण किया, विधि करने में जो कोई अविधि हुई हो वह सभी मन-वचन-काया से मिच्छामि दुक्कडं ।

दश मन के दश वचन के बारह काया के ऐसे बत्तीस दोषमें से जो कोई दोष लगा हो तो वह सभी मन-वचन-काया से मिच्छामि दुक्कडं

पार्श्वनाथ जी की जय चिंतामणि

जय चिंतामणि पार्श्वनाथ, जय त्रिभुवन स्वामी
अष्ट कर्म रिपु जीतीने, पंचमी गति पामी।।1।।
प्रभु नामे आनंद कंद, सुख संपत्ति लहीओ प्रभु
नामे भव भवतणां, पातक सब दहीओ।।2।।
ॐ ह्रीं जोड़ी करी, जपीओ पार्श्वनाम विष
अमृत थई परिणामे, लहीओ अविचल ठाम

चैत्यवंदन आज देव

आदि देव अरिहन्त नमूं, सिमरूं तारूं नाम । जहां-जहां प्रतिमा
जिनतणी, तहां-तहां करूं प्रणाम ॥१॥
शत्रुंजय श्री आदि देव, नेम नमूं गिरनार । तारंगे श्री अजित
नाथ, आबू ऋषभ जुहार ॥२॥
अष्टापद गिरि ऊपरे, जिन चौबीसे जोय । मणिमय मूरति
मानसुं भरते भरावी सोय ॥ ३ ॥
सम्मेत शिखर तीरथ बड़ो, जहां वीशे जिन पाय । वैभारिक
गिरि ऊपरे, श्री वीर जिनेश्वर राय ॥४॥
मांडवगढ़ नो राजियो, नामे देव सुपास। 'ऋषभ' कहे जिन
समरतां, पहुंचे मन की आस ॥५॥

श्री वल्लभ गुरु के चरणों में

श्री वल्लभ गुरू के चरणों में,
मैं नित उठ शीश नमाता हूँ
मेरे मन की. कली खिल जाती है,
जब दर्श तुम्हारा पाता हूँ ।।1।।

मुझे वल्लभ नाम ही प्यारा है,
इस ही का मुझे सहारा है।
इस नाम में ऐसी बरकत है,
जो चाहता हूँ सो पाता हूँ ।।2।।

जब याद तेरे गुण आते हैं,
दुःख दर्द सभी मिट जाते हैं।
मैं बन कर मस्त दीवाना फिर,
बस गीत तेरे ही गाता हूँ ।।3।।

गुरूराज तपस्वी महामुनि,
सिरताज हो तुम महाराजों के।
मैं इक छोटा सा सेवक हूँ,
कुछ कहता हुआ शरमाता हूँ ।।4।।

गुरू चरणों में हे अर्ज यही,
बढ़ती दिन-रात रहे भक्ति।
मेरा मानुष जन्म सफल होवे,
यही भक्ति का फल चाहता हूँ ।।5।।